Seventeenth Loksabha

>

Title: Request to confer Bharat Ratna award to Swami Karpatriji Maharaj.

श्री संगम लाल गुप्ता (प्रतापगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, आज मैं एक ऐसे संत के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ, जिन्होंने 'धर्म की जय हो , अधर्म का नाश हो । प्राणियों में सदभावना हो, विश्व का कल्याण हो, भारत अखंड हो, गौ हत्या बंद हो' का उद्घोष किया था, जो विश्व में आज किसी न किसी समय कथाओं के पश्चात् उच्चारित किया जाता है ।

मैं आज ऐसे महान संत, धर्मसम्राट और प्रकांड विद्वान स्वामी करपात्री जी को याद करना चाहता हूं । जिनका जन्म उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के प्रतापगढ़ में हुआ था वह एक महान स्वतंत्रा सेनानी और एक राजनेता थे जिनका मूल नाम हरि नारायण ओझा था । हालांकि वे 'करपात्री' नाम से प्रसिद्ध थे, क्योंकि वो दोनों अंजुली के अंदर जितना प्रसाद आता था, उतना ही भोजन पाते थे स्वामी जी की स्मरण शक्ति धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज के सपने को हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी और अमित शाह जी ने कश्मीर से अनुच्छेद 370 समाप्त कर अखंड भारत के स्वामी जी के सपने को साकार किया । इसी के साथ-साथ स्वामी जी ने विश्व कल्याण के लिए जो बात की थी उसे भी माननीय मोदी जी ने यूएनओ में संपूर्ण विश्व से आतंकवाद को समाप्त करने के लिए आवाहन किया।

महोदय, 1940 के दशक में देशभर में एक ऐसे साधु की गूंज सुनाई देने लगी, जो एक बड़े गोरक्षक होने के साथ हिंदू सरोकारों के लिए आवाज उठाते थे । देशभर में स्वामी करपात्री महाराज का परचम लहराने लगा था । स्वामी करपात्री जी हिंदुओं के बीच बहुत सिद्ध माने जाते थे । सियासी नेताओं से लेकर शंकराचार्यों के बीच उनका बहुत सम्मान था ।

देश के आजाद होने के बाद उन्होंने गोरक्षा पर बड़ा अभियान चलाया । स्वामी करपात्री जी के नेतृत्व में 1965 में भारत के लाखों संतों ने गोहत्याबंदी और गोरक्षा पर कानून बनाने के लिए एक बहुत बड़ा आंदोलन चलाया । 1966 में अपनी इसी मांग को लेकर सभी संतों ने दिल्ली में एक बहुत बड़ी रैली निकाली, लाखों साधु-संतों ने करपात्रीजी महाराज के नेतृत्व में बहुत बड़ा जुलूस निकाला । लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री ने उन साधुओं पर गोलियां चलवा दी और कई साधुओं की मौत हो गई । देशभर में इसकी घोर निंदा हुई । धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी को मेरठ जेल में बंद कर दिया गया । जहां लोहे की सरिया से उनकी पिटाई कराई गई और उस वजह से उनकी आंखों की रोशनी चली गई । इस कुकृत्य पर स्वामी जी के श्राप के कारण एक पार्टी प्रमुख के परिवार का बहुत बुरा हश्र हुआ है और उनकी पार्टी आज हाशिये पर आ गई है ।

ऐसे महान संत की उस दौर में कद्र नहीं की गई जो पूरे समाज के लिए एक आईना थे । वे युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत थे । …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: श्री संतोष पाण्डेय जी ।

श्री संगम लाल गुप्ता: माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आधे मिनट में अपनी बात समाप्त करूंगा।

इसलिए मैं आज आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि ऐसे महान संत, धर्मसम्राट और प्रखंड विद्वान करपात्री जी को सरकार मरणोपरांत 'भारत रत्न' से सम्मानित करे । ऐसे महान विद्वान के लिए कोई भी सम्मान उनके कद से बड़ा नहीं है, लेकिन सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' देकर हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।…(व्यवधान) ताकि आने वाली पीढ़ी उनके बलिदान को याद कर सके और उनकी विद्वता को अपने जीवन में उतार सकें, क्योंकि स्वामी करपात्री जी जैसे व्यक्ति बार-बार इस धरती पर नहीं आते । धन्यवाद।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: श्री संतोष पाण्डेय जी, आप बोलिए ।

श्री संगम लाल गुप्ता: अध्यक्ष महोदय, मैं एक सेकण्ड समय में कहना चाहता हूं कि …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: नहीं । संतोष पान्डेय जी, आप बोलिए।

…(व्यवधान)…*

श्री संतोष पान्डेय (राजनंदगाँव): अध्यक्ष महोदय, मैं आपके प्रति आभारी हूं कि आपने मुझे शून्य काल में बोलने का अवसर दिया है।

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून, पानी गए न ऊबरे मोती मानुष चून ।"

माननीय अध्यक्ष: आपकी बात हो गई । चलिए, नमस्कार ।

सुनील सोरेन जी ।

श्री संतोष पान्डेय : अध्यक्ष महोदय, एक मिनट समय दीजिए।

माननीय अध्यक्ष: मोती के लिए संसद नहीं है, आप अपनी बात रखिए।